B.A. (Hons) Part III
Philosophy - Paper VII
Topic - Validity of Logical Arguments

Dr. Sachidanand Prasad
Dept. of Philosophy
R.R.S. College, Mokama.

किसी भी परीक्षण की रचना किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर की जाती है। कोई परीक्षण, अपने पूर्व निर्धारित उद्देश्य का जिस सीमा तक मापन करता है वह परीक्षण उसी सीमा तक वैध माना जाता है। आ० महेश मार्गव के अनुसार- "परीक्षण वैधता से हमारा आशय यह है कि कोई अमुक परीक्षण, कितनी शुद्धता एवं प्रभावकता से परीक्षण के उन विशिष्ट एवं सामान्य उद्देश्यों का मापन करता है, जिसके हेतु उसकी रचना की गई है, अर्थात् वैधता उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शुद्धता व सार्थकता को इंगित करती है।" तर्कवाक्य का आकारात्मक गुण उसकी वैधता होती है, यही कारण है कि तर्क की दृष्टि से कोई कथन सत्य भी हो सकता है और असत्य भी लेकिन कथन के असत्य अथवा सत्य हो जाने से ही तर्कवाक्य को वैध या अवैध नहीं माना जाता है। इसलिए यह स्पष्ट होता है कि तर्कवाक्यों की सत्यता

या असत्यता पर उनका वैध या अवैध होना निर्भर नहीं करता है। इसे निम्नलिखित तालिका से और स्पष्ट समझा जा सकता है।

क्रम सं.	आधारवाक्य	युक्ति	निष्कर्ष
1.	असत्य	अवैध	असत्य
2.	असत्य	अवैध	सत्य
3.	सत्य	वैध	सत्य
4.	सत्य	वैध	असत्य
5.	सत्य	अवैध	सत्य
6.	सत्य	अवैध	असत्य
7.	असत्य	वैध	सत्य
8.	असत्य	वैध	सत्य

तर्कशास्त्रियों ने तर्कवाक्यों की वैधता निर्धारित करने हेतु निम्न वैध युक्तियों के प्रारूपों की खोज की है जिन्हे वैधता के नियम कहते हैं।

1. अस्तित्व सामान्यीकरण का नियम :- इस नियम के अनुसार किसी तर्कवाक्य के आधारवाक्यों में कम से कम एक वस्तु ऐसी होनी चाहिए जो तर्कवाक्य के दोनों आधारवाक्यों में हो। दूसरे शब्दों में जब किसी तर्कवाक्य के आधारवाक्यों में एक वाक्य दोनों वाक्यों में होने पर ही वह युक्ति वैध मानी जायेगी। इसके विपरित दो नो आधारवाक्यों में जब किसी एक ही बात को दो व्यक्तियों पर घटाया जायेगा तो वह युक्ति अवैध होगी। जैसे-

कुछ तोते पक्षी है
कुछ कौवे पक्षी है
∴ कुछ तोते कौवे है।

(2) सर्वव्यापी दृष्टान्तीकरण का नियम :- इस नियम के अनुसार किसी सर्वव्यापी आधार वाक्य के निष्कर्ष का सामान्य परिणाम उसके संबंध में प्राप्त समस्त उदाहरण सत्य होने पर ही सत्य माना जायेगा अन्यथा नहीं। जैसे-

सभी मनुष्य मरणशील है।
राम एक मनुष्य है
∴ राम मरणशील है।

(3) अस्तित्वपरक दृष्टान्तीकरण का नियम :- इस नियम का अर्थ यह है कि जब किसी तर्कवाक्य का निष्कर्ष अस्तित्ववाचक होता है तथा उसमें कम से कम एक वाक्य होता है जिसे तर्कवाक्य के द्वितीय हेतु में रखने पर उसका एक वास्तविक उदाहरण प्रस्तुत होगा। जैसे -

समस्त महापुरुष पूजनीय है।
समस्त महापुरुष मनुष्य है
कुछ महापुरुष पूजनीय है

(4) सर्वव्यापी सामान्यीकरण का नियम :- इस नियम के अनुसार जब किसी युक्ति में किसी बात को पहले समस्त व्यक्तियों पर लागू उसी आधार पर विशेष व्यक्ति पर उसी बात को लागू किया जाता है। जैसे- कोई भी व्यक्ति अनश्वर नहीं है। इस युक्ति को इसप्रकार स्पष्ट करने से युक्ति वैध होगी।

समस्त व्यक्ति अनश्वर नहीं है
∴ कोई भी व्यक्ति अनश्वर नहीं है।